संस्कृतम्

(एकादशकक्षायाः पाठ्यपुस्तकम्)

माध्यमिकशिक्षापरिषद्, उत्तरप्रदेशः
प्रयागराजः

Royalty Paid Book

प्रथम संस्करण : 2023-24
द्वितीय संस्करण : 2025-26

© माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज–211001

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक किसी अन्य प्रकार से व्यापार, पुनर्विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य ₹ 17.00

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में 80 जी.एस.एम. मैपलीथो पेपर IS मार्क नवीनत्म संशोधित BIS Specification 1848/2007 Updated Revised पेपर (सेतिया पेपर मिल्स लि., के. आर. पल्प एण्ड पेपर्स लिमिटेड, बिन्दल पेपर मिल्स लि., मोहित पेपर मिल्स लि., ट्राइडेन्ट लि.) के मानक का प्रयुक्त किया गया है।

मुद्रक एवं वितरक :

राजीव प्रकाशन

48/13A रामबाग, प्रयागराज

दूरभाष : 2402474, 2404980

पुरोवाक्

अतिहर्षावहो विषयोऽयं यद् उत्तरप्रदेशस्थप्रयागराजस्य माध्यमिकशिक्षापरिषदा माध्यमिकोच्चतर माध्यमिक–कक्षाणां कृते पाठ्यपुस्तकानां नूतनं संस्करणं प्रस्तूयते।

शिक्षा स्वविस्तृतार्थे शिक्षणस्यासौ प्रक्रिया या आजीवनं निरन्तरं प्रवर्तते, परंतु औपचारिकी शिक्षा मनुष्यस्य ज्ञानं कौशलं च विवर्धय्य तं सुयोग्यं नागरिकं विदधाति। शिक्षायाः प्रक्रियैषा व्यक्तेराचरणं व्यवहरणं बोधस्तरं भाषाबोधं चादधाति।

राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 अधुनातनवैश्विकपरिदृश्यानुरूपं ज्ञानेन सहैव कौशलस्य महत्त्वमादधाना विद्यालयीयशिक्षायामुच्चशिक्षायां च छात्रेभ्यः संस्कृतस्य तथा चान्यभारतीयभाषाणां विकल्पं प्रददाति। वर्तमाने प्रचलिताः सर्वाः भारतीयभाषाः आहोस्वित् संस्कृताद् विकसिताः उताहो तासु संस्कृतस्य व्यापकः प्रभावः। अथ च निखिलभारतीयभाषासाहित्येऽपि संस्कृतसाहित्यस्य अविनाशिप्रभावः। अतः संस्कृतभाषायाः तत्साहित्यस्य चाध्ययनं भाषाबोधसामर्थ्यं विवर्धयत् स्वाभिज्ञानमूलानि प्राचीनां श्रेष्ठसंस्कृतिं ज्ञानं विज्ञानं दर्शनं च प्रत्यभिज्ञापयत् गौरवस्यानुभूतिं राष्ट्रप्रेमजागरणं चानुतिष्ठति। संस्कृतं भारतीयानामैक्यबन्धावस्थापने दृढं सूत्रमस्ति। अपि च भाषेयं स्वव्याकरणेन शब्दसामर्थ्येन चाभिनवां प्रौद्योगिकीं व्यक्तीर्क्तुं पूर्णरूपेण शक्ता। अतः संस्कृतस्याध्ययनम् अत्यन्तमुपयोगाय कल्पते।

विद्यार्थिनां समग्रविकासमभिलक्ष्य एकादशद्वादशकक्ष्ययोः (कक्षा–11, 12) परीक्षासु सत्रार्धपाठ्यक्रमपरीक्षा–(सेमेस्टर) पद्धतिः बहुविकल्पीयप्रश्नानां योजनादीनि परिवर्धनानि कृतानि सन्ति। तदनुसारं विदुषां परामर्शदातृणाम् अनुभवसम्पन्नानां विषयविशेषज्ञानां विभागीयसदस्यानां च समवेतप्रयत्नेन सिद्धानि सज्जितानि संस्कृतानि च संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि शिक्षकाणामध्यापनाय सुखावहानि विद्यार्थिनां च सुखावबोधाय भवेयुः।

डॉ0 महेन्द्र देवः
निदेशकः (मा0)/सभापतिः
माध्यमिकशिक्षापरिषद्
उत्तरप्रदेशः, लखनऊ

पाठ्यपुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन।

निर्देशक :

डॉ0 महेन्द्र देव, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

संयोजक :

श्री दिब्यकान्त शुक्ल, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

सह–संयोजक :

श्री अशोक कुमार गुप्ता, अपर सचिव (पा0पु0रा0), माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती मनीषा कुशवाहा, सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

परामर्शदातृमण्डलः

डॉ0 आनन्द कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, सी0एम0पी0पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज।

प्रो0 कौशल किशोर श्रीवास्तव, पूर्व संकायाध्यक्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

प्रो0 भगवत शरण शुक्ल, पूर्व आचार्य, व्याकरण–विभाग, प्रा0वि0ध0वि0 सङ्काय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी।

प्रो0 मनोज कुमार मिश्र, अध्यक्ष, वेद–विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीरणवीर परिसर, जम्मू।

विषय–विशेषज्ञः

डॉ0 शम्भुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल', पूर्व प्राचार्य, त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, प्रयागराज।

डॉ0 राजकुमार मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीरणवीर परिसर, जम्मू।

डॉ0 आरुणेय मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज, प्रयागराज।

डॉ0 वाचस्पति मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़।

डॉ0 यीश नारायण द्विवेदी, असिस्टेंट प्रोफेसर, सदानन्द डिग्री कॉलेज, फतेहपुर।

डॉ0 कमलेश कुमार, प्रवक्ता, गोपाल विद्यालय इण्टर कॉलेज, कोरांव, प्रयागराज।

डॉ0 अवधेश कुमार पाण्डेय, प्रवक्ता, आदर्श इण्टर कॉलेज, अवन्ती गौरी, आजमगढ़।

डॉ0 संदीप कुमार मिश्र, प्रवक्ता, राष्ट्रीय इण्टर कॉलेज, सुजानगंज, जौनपुर।

समन्वयकः

सुधा चौरसिया, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

बबली पासी, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

चित्राङ्कनः

आशीष नारायन।

●

भूमिका

'संस्कृतं नाम दैवी वाक्' यह उक्ति ही संस्कृत भाषा की गुरुता एवं गरिमा की अभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त है। समस्त भारतीय भाषाओं की जननीस्वरूपा संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। इस भाषा के दो रूप दृष्टिगत होते हैं–**वैदिक संस्कृत** एवं **लौकिक संस्कृत। 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'** के माध्यम से इसकी प्रतिष्ठा प्राचीन काल से ही सर्वविदित है। इसे 'देववाणी', 'अमृतभाषा' आदि संज्ञाओं से भी अभिहित किया गया है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने संस्कृत विषय के कक्षा–11 के छात्रों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में संस्कृत वाङ्मय की लोकप्रिय एवं बहुचर्चित काव्यकृतियों के महत्त्वपूर्ण अंशों का समावेश करते हुए उन्हें एक मानक पाठ्य–पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया है, जिसमें बाणभट्टकृत–कादम्बरीसारभूता **चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)**, कविकुलगुरु कालिदास विरचित **रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग)** एवं **अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)** संकलित हैं। विद्यार्थियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए पाठ्य–पुस्तक को बोधगम्य, सरल व परिनिष्ठित शैली में प्रस्तुत करने का यथाशक्य प्रयास किया गया है।

'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' की उक्ति को सार्थक करती हुई बाणभट्टकृत 'कादम्बरी' संस्कृत गद्य–साहित्य की अनुपम रचना है। इसी कृति के अंश को संकलित कर 'चन्द्रापीडकथा' नामक पाठ्य–सामग्री को सरल व सुबोध रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'रघुवंशमहाकाव्यम्' महाकवि कालिदास विरचित लोकप्रिय प्रसिद्ध कृति है, इसके द्वितीय सर्ग को पाठ्यक्रम में अति सरल व बोधगम्य रूप में निबद्ध किया गया है। इस अंश में प्रयुक्त अनुपम सूक्तियाँ एवं उपमा–विधान **'उपमा कालिदासस्य'** जैसी उक्ति की सार्थकता के साथ अत्यन्त चमत्कारिणी और मनोहारी रूप में स्वतःसिद्ध हैं। **'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला'** इस प्रसिद्ध कथन के अनुसार महाकवि कालिदासप्रणीत नाट्यकृति को सर्वश्रेष्ठ नाटक तो माना ही गया है, वहीं **'शाकुन्तले चतुर्थाङ्कः'** के आधार पर लोकरुचि के सापेक्ष 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का समावेश करते हुए पाठ्य–पुस्तक को सुरुचिपूर्ण एवं बोधगम्य बनाने का सार्थक प्रयास किया गया है।

इन पाठ्यांशों के अतिरिक्त पाठ्य–पुस्तक के अन्तर्गत संस्कृत में पत्र–लेखन, अलङ्कार एवं व्याकरणात्मक ज्ञान हेतु अनुवाद, कारक तथा विभक्ति, समास, सन्धि, प्रत्यय, शब्दरूप व धातुरूप का भी संक्षेपतः समावेश हुआ है।

इस पुस्तक में विद्यार्थियों के अध्ययन–सौविध्य का पूर्णतया ध्यान उनके मानसिक स्तर के अनुकूल रखते हुए विषय–वस्तु का संकलन करना प्रमुख लक्ष्य है। इस दृष्टि से रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय, शैली, कृतियों की कथावस्तु का सारांश, श्लोकों का अन्वय व उनकी व्याख्या सहित अनुवाद, गद्यांशों के अन्तर्गत व्याकरणात्मक टिप्पणी, शब्दार्थ, व्याख्या, अनुवाद आदि दिये गये हैं। विद्यार्थियों के सम्यक् अवबोध व संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के आलोक में पाठों के अन्त में सामग्री सम्बन्धित प्रश्नों का भी सम्व्यूहन किया गया है। समग्र पाठ्य–सामग्री में सूक्तियों को भी प्राथमिकता दी गयी है। इनके अतिरिक्त बहुविकल्पीय प्रश्नों का भी पूर्ण उपस्थापन किया गया है।

प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री की संकल्पना विशेषतः विद्यार्थियों के स्तर व बौद्धिक विकास को ध्यान में रखकर ही इस अपेक्षा से की गयी है कि इन पाठों व अभ्यास प्रश्नों से प्रेरित होकर विद्यार्थियों में जहाँ अपनी सांस्कृतिक सम्पदा का ज्ञानवर्द्धन होगा वहीं उनके दैनन्दिन जीवन में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि एवं बोलने–लिखने की कला का विकास सम्भव हो सकेगा।

हमें आशापूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास व बौद्धिक क्षमता वृद्धि के लिए उपादेय होगी।

■

अनुक्रमणिका

- ❑ पुरोवाक् iii
- ❑ भूमिका v

खण्ड 'क' (गद्य) – चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्धभागः)

- ❑ महाकवि बाणभट्ट : जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व 3-4
- ❑ बाणभट्ट की गद्यशैली 4-5
- ❑ चन्द्रापीडकथा : कथासार 5-8
- ❑ पात्रों का चरित्र–चित्रण 8-15
- ❑ चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्धभागः) 16-88
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 88-92

खण्ड 'ख' (पद्य) – रघुवंशम् (द्वितीयः सर्गः)

- ❑ कालिदास का जीवन–परिचय 95-98
- ❑ कालिदास का कर्तृत्व 98-100
- ❑ कालिदास की काव्य–शैली 101-104
- ❑ उपमा कालिदासस्य 104-107
- ❑ रघुवंश महाकाव्य : संक्षिप्त परिचय 108-110
- ❑ रघुवंशमहाकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश 110-111
- ❑ रघुवंशम् (द्वितीयः सर्गः)– १ तः ४0 श्लोकपर्यन्तम् 112-149
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 150-152

खण्ड 'ग' (नाटक)–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

- ❑ कालिदास की नाट्यकला 155-158
- ❑ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का सारांश 158-158
- ❑ पात्रों का चरित्र–चित्रण 159-165
- ❑ अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)–१ तः १0 श्लोकपर्यन्तम् 166-185
- ❑ सूक्ति–व्याख्या 186-187
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 187-188

खण्ड 'घ'

❑ पत्र–लेखन 191-199

खण्ड 'ङ'

❑ अलङ्कार (अनुप्रास एवं यमक) 200-201

खण्ड 'च' (व्याकरण)

1. अनुवाद 202-211
2. कारक तथा विभक्ति 212-220
3. समास 221-232
4. सन्धि (स्वर सन्धि) 233-241
5. शब्दरूप 242-251
6. धातुरूप 252-266
7. प्रत्यय 267-272

■